thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.11.2014 ओ३म् एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

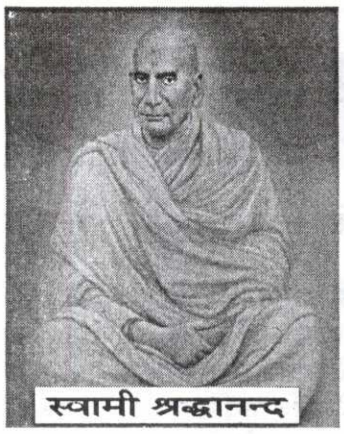

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 37 अंक 11

नवम्बर, 2014 विक्रम सम्वत् 2071 कार्तिक-मार्गशीर्ष

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 300 रुपये

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

मनुष्य जीवन के आठ दीपक

–डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

महात्मा विदुर बहुत बड़े तत्त्वदर्शी, विद्वान एवं आप्त पुरुष थे। ऋषि दयानन्द ने भी उनके सिद्धान्तों का अनुसरण किया। व्यवहारभानु, सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थों में विदुर के अनेक श्लोकों का उल्लेख ऋषि दयानन्द ने किया है, ऐसे तत्त्वज्ञानी विदुर ने धृतराष्ट्र को समझाते हुए कहा था कि मनुष्य को मृत्यु पर्यन्त अपने जीवन में सत्कर्म करते हुए आठ दीपकों को प्रज्वलित करके रखना चाहिए। जो मनुष्य इन दीपकों को बुझा देता है वह स्वयं समाप्त हो जाता है। विदुर ने कहा है–

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च ।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ।।

इस श्लोक में जिन आठ गुणों की चर्चा है वे मनुष्य के जीवन में दीपक के समान हैं। वे गुण निम्नलिखित हैं – (1) प्रज्ञा– प्रज्ञा ही मनुष्य को चमकाता है। प्रज्ञा बुद्धि का उत्कृष्ट रूप है। उत्तम बुद्धि ही मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

जहाँ सुमति वहाँ सम्पत्ति नाना,
जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निधाना।।

वेद की सभी कामनाएँ वैद्धिक हैं। भगवान से सदैव सन्मति मांगनी चाहिए सम्पत्ति नहीं। चाणक्य सदैव यही कहते थे मेरा सब कुछ चला जाये, परन्तु मेरी बुद्धि कभी भी न जाये। अतः जीवन में प्रज्ञा को सदैव प्रज्ज्वलित रखना चाहिए।

(2) कौल्यम् – कौल्यम् का अर्थ है कुलीनता । कुल की परम्परा एवं विरासत को संभालकर आगे बढ़ाना चाहिए। जो भी व्यक्ति कुलीनता को समाप्त कर देता है उसका वंश भी समाप्त हो जाता है। आज से 68 वर्ष पहले हमारे देश में लग-भग 550 राज परिवार था। परन्तु उनमें से अब 50-60 ही राज परिवार बचे हुये हैं। बाकियों का नामोंनिशान मिट चुका है। इसका मूल कारण कुलीनता का अभाव ही रहा है। इसी लिये राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त लिखते हैं –

किसी भाँति जीना चाहिए किस भाँति मरना चाहिए।
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद चिहन उनके यत्न पूर्वक खोज लेना चाहिए।
निज पूर्व गौरव दीप को बुझने न देना चाहिए।।

(3) दम : – दम का अर्थ है संयम करना वा आत्म नियन्त्रण। संसार में सबसे बड़ी जीत अपने पर विजय है। अपने पर विजय विवेक एवं वैराग्य के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। जिन्होंने ने भी संसार को जीता अथवा संसार ने जिनका अनुगमन किया वे सभी जितात्मा थे। जो व्यक्ति इन्द्रजीत (इन्द्रिय विजेता) होगा वह कभी दुःखी व परेशान हो ही नहीं सकता।

(4) श्रुतं – श्रुतं का अर्थ है सुनना। वेद कहता है– **संश्रुतेन गमेमहि, मा श्रुतेन विराधिषि** अर्थात्– जो वेदवाणी सुना है उस मार्ग पर हम चलें तथा जो सुना है उसे कभी न भूलें। वस्तुतः सत्संग-स्वाध्याय-यज्ञ-आदि श्रुतं के अन्तर्गत आ जाते हैं। इस लिए ऋषि दयानन्द ने वेद का सुनना-सुनाना को परमधर्म माना है। ऐसे-ऐसे डाकू जिनको पुलिस, राजा, न्यायालय नहीं सुधार पाये वे सत्संग के माध्यम से, महान पुरुषों की वाणी से एक ही झटके में सुधर गये।

(5) पराक्रमः– पराक्रम का अर्थ है साहसी होना, बहादूर होना। दुःख, कष्ट, विपत्ति से, जिन्दगी की समस्याओं से भागना-घबराना नहीं अपितु साहस के साथ उनका सामना करना। हम यज्ञ में **तेजोऽसि तेजोमयि धेहि** की प्रार्थना करते हैं और जीवन को निस्तेज होकर व्यतीत करते हैं।

(6) अबहुभाषिता – ज्यादा न बोलना। ज्यादा बोलने से शक्ति क्षीण हो जाती है। ज्यादा बोलने से विवेक समाप्त हो जाता है। मुनियों को मुनि इसलिए कहा जाता था क्यों कि वे अधिक से अधिक समय मौन रहते थे। बोलना कम चाहिए एवं ज्यादा करना चाहिए।

(7) दानं यथाशक्ति – यथाशक्ति देना चाहिए। दान धन का नमक होता है। दिया हुआ दान एवं किया हुआ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। ऋषि दयानन्द से किसी ने पूछा मैं तो बहुत गरीब हूँ किसी का उपकार कैसे कर सकता हूँ? ऋषि ने उत्तर दिया किसी का अपकार न करना भी बहुत बड़ा उपकार है। हमें आज जो कुछ भी मिला है कुछ माता-पिता से , कुछ गुरु से, कुछ समाज से एवं कुछ ईश्वर कृपा से सब कुछ तो कृपांक है। अतः धन को, बुद्धि को, विद्या को, बल को एवं सत्कर्म को आगे बढ़ा देना चाहिए।

(8) कृतज्ञता – किसी के उपकार को मानना। श्री राम चन्द्र नदी पार कराने वाल केंवट को कभी नहीं भूले। ऋषि दयानन्द मथुरा प्रवास के समय भोजन की व्यवस्था करने वाले अमरलाल जोशी का उल्लेख कृतज्ञता पूर्वक पूना प्रवचन में करते हैं। कृतज्ञता से ही जीवन की उन्नति होती है। कृतघ्न व्यक्ति का संसार में कोई भी निष्कृति नहीं है। अतः सभी को माता-पिता, गुरु, ऋषि, समाज के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि जो भी इन आठ दीपकों को अपने जीवन में जलाये रखेगा वह अन्याय-अभाव-अज्ञान-आलस्य से सदैव दूर रहेगा एवं उसका जीवन निश्चित रूपण सुखमय होगा।

गोपाल दास नीरज ने ठीक ही कहा है –

दीये से मिटेगा न मन का अन्धेरा
धरा को उठाओ गगन को झुकाओ
बहुत बार आई गई यह दिवाली
मगर तम जहाँ था वहीं पर खड़ा है
बहुत बार लौ जल बुझी गर अभी तक
कफन रात का हर चमन पर पड़ा है
न फिर सूर्य रुठे, न फिर स्वप्न टूटे
उषा को जगाओ, निशा को सुलाओ
दिये से मिटेगा न मन का अन्धेरा।
मनुज को जगाओ, दनुज को मिटाओ।

"राम"

चहुं दिशा में दिखते राम
क्या हो गया मेरा राम-राम?
बाइबिल के पन्नों में राम।
मस्जिद की अजान में राम
गंगा-जमुना के पानी में राम
जीव में राम, जन्तु में राम
निर्जीव में सजीव में
दरिद्र में सम्पन्न में
गुरु ग्रंथ साहिब में
भांति-भांति के रूप धरकर
मुझे न भरमा पाये
अल्ला राम ईसा राम
धरती राम आकाश राम
कण-कण में महिमा राम की
अपनी सबको जय सिया राम
दृश्य में राम, अदृश्य में राम
मुर्दा राम जीवित राम
सोये तो राम उठे तो राम
देश में राम, परदेश में राम
जल-थल-नभ में राम
भ्राता, पिता माता भी राम
मेरे राम श्री राम जय-जय राम
चित्त में राम मन में राम
राम ही कर्म मेरा
राम ही धर्म मेरा
राम ही जीवन मेरा
आगे-पीछे ऊपर, नीचे
श्वास-श्वास में केवल राम
राम ही राम । जय श्री राम।

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शंका और समाधान

–स्व. अभयदेव दर्शनाचार्य

प्रश्न : क्या सारे कर्म ईश्वर की प्रेरणा से ही किये जाते हैं?

उत्तर : सारे अच्छे कर्मों में ईश्वर प्रेरणा तो देता रहता है परन्तु उन प्रेरणाओं को मानने में जीव स्वतंत्र हैं। वह मान भी सकता है तथा नहीं भी मान सकता है। जीव प्रत्येक कर्म को अपनी इच्छा से ही करता है। यदि जीव दूसरे की इच्छा से कर्म करे तो फल भी दूसरे (ईश्वर) को ही मिलेगा। यदि जीव ईश्वर की प्रेरणा को मानने लगे तो जीव की स्वतंत्रता नष्ट हो जाएगी और कर्मों का फल जीवों को नहीं मिल पाएगा।

प्रश्न : मनुष्य बुरे कर्मों को क्यों करता है?

उत्तर : मनुष्य के चित्त में अनेक जन्मों के बुरे व अच्छे संस्कार विद्यमान रहते हैं। उन बुरे संस्कारों के कारण बुरे कर्मों को करता है। समाज में अच्छे व बुरे सब प्रकार के लोग रहते हैं। बुरे लोगों के सम्पर्क व बुरे साहित्य बुरे दृश्य बुरी घटनाओं को देखने, पढ़ने व सुनने से वह बुरे कर्म को करने के लिऐ तैयार हो जाता है। अधिकतर बुरे कर्म करने वाले लोगों के मन में यह बात विद्यमान रहती है कि बुरे कर्म करने से सुख मिलेगा, इसलिए भी वह बुरे कर्मों की ओर अग्रसर होता है।

प्रश्न : क्या ऐसा संभव है कि संसार में सभी लोग अच्छे कर्म करने वाले ही हों।

उत्तर : ऐसा संभव नहीं है क्योंकि संसार के बने हुए करोड़ों वर्ष हो चुके, अभी तक सारे मनुष्य अच्छे नहीं हुये और आगे भी नहीं होंगे, जैसे फुलवाड़ी में अच्छे, बुरे, सुगन्धित व गन्धरहित सब प्रकार के फूल होते हैं। ऐसे ही संसार में सब प्रकार के लोग होते हैं। यदि सारे फूल एक समान हो तो देखने में आनन्द नहीं आएगा। वैसे ही सारे मनुष्य अच्छे ही हों तो संसार का आनन्द समाप्त हो जाएगा। अर्थात् विविधता में ही आनन्द है।

प्रश्नः सभी लोग बोलते हैं कि पहले के लोग बहुत अच्छे थे और आज के लोग खराब हैं।

उत्तर : सौ दो सौ साल के बाद जो लोग आयेंगे वे हमको ही अच्छा कहेंगे। वे कहेंगे सौ साल पहले लोग बहुत अच्छे थे। जिनको आज बुरा कहा जा रहा है उनको ही बाद वाले लोग अच्छा कहेंगे। अर्थात् यह तो मनुष्य की मानसिकता है कि वह भूतकाल को अच्छा तथा वर्तमान को बुरा सिद्ध करता है। कोई भी ऐसा काल नहीं था जब चोरी, हत्या व बलात्कार नहीं थे। हाँ ऐसा तो सम्भव है कि किसी काल में बुरे कर्म ज्यादा होते हैं तथा किसी काल में बुरे कर्म न्यून होते हैं, लेकिन अच्छे बुरे कर्म तो सभी कालों में होते हैं।

वर्तमान समय में भी कुछ क्षेत्र में मारकाट अधिक देखे जाते हैं तथा कुछ क्षेत्र में मार काट न के बराबर होते हैं। भूतकाल में भी अनेक ऋषि महर्षि व विद्वान् हुये, वैसे ही आज भी अनेक विद्वान्, लेखक, समाज सुधारक व वैज्ञानिक विद्यमान हैं।

प्रश्न : बहुत से लोग अच्छे कर्म क्यों करते हैं?

उत्तर : गुरु, न्यायाधीश व ईश्वर हमें दण्ड देंगे, हमारा अपयश होगा, इसलिए दण्ड व अपयश के भय से मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करता है। जैसा कि मनु महाराज लिखते हैं।

दण्डःशास्ति प्रजाः सर्वाः दण्डः एवाभिरक्षति ।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।

अर्थात दण्ड के बिना शासन संभव नहीं है। दण्ड ही सब मनुष्यों की रक्षा करता है। दण्ड सोये हुए मनुष्य को जगा देता है और विद्वानों ने दण्ड को ही धर्म कहा है। मनु महाराज के काल में भी बुरे लोग थे, इसलिये उन्होंने बहुत ही कठोर दण्ड (मृत्यु दण्ड) व हाथ, पैर काट देने का विधान किया है।

प्रश्न : क्या बहुत कठोर दण्ड देने से बुरे कर्म बन्द हो जायेंगे।

उत्तर : कितना भी कठोर दण्ड देवें, पाप कभी भी समाप्त नहीं हो सकता है क्योंकि दण्ड से जनता में तो बहुत कुछ सुधार हो सकता है तथा जनता द्वारा बुरे कर्म करने पर तो न्यायाधीश दण्ड दे देगा, परन्तु न्यायाधीश भी बुरे कर्म करते हैं उनको कौन दण्ड देगा? अनेक न्यायाधीश रिश्वत (घुस) लेते हैं इसलिए पाप पूर्ण रूपेण समाप्त नहीं हो सकता है।

प्रश्न : राजा व न्यायाधीश के द्वारा दण्ड दे देने पर क्या ईश्वर पुनः दण्ड नहीं देता है?

उत्तर– मनुस्मृति के आठवें अध्याय के 318 वें श्लोक में लिखा है–

राजभिः कृतदण्डास्तु कृत्वा पापानि मानवाः।
निर्मलाः स्वर्गमायन्ति सन्तः सुकृतिनो यथा।।

अर्थात् जैसे कि श्रेष्ठ लोग अच्छे कर्म करके सुख को प्राप्त होते हैं वैसे ही पापी लोग राजाओं के द्वारा दण्ड भुगत कर पवित्र हो जाते हैं तो दण्ड भुगत लेता है, बुरे संस्कारों से भी मुक्त हो जाता है, इससे सिद्ध हुआ कि बुरे संस्कार कमजोर हो जाने पर वे दोष की भावना से रहित होकर भविष्य में अच्छे कर्म की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। इससे वे सुख की अनुभूति करते हैं तथा पुनः उन कर्मों का फल ईश्वर नहीं देता है। क्योंकि कर्मों का फल तो वे भुगत ही चुके हैं। एक ही कर्म का फल बार बार मिलने पर अव्यवस्था का दोष आयेगा। अतः जिन कर्मों का फल राजा दे चुका है उन कर्मों का फल ईश्वर के द्वारा नहीं मिलता है।

ऋषियों ने भी किए शुद्धि कार्य

–डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह (खुर्जा)

स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् 1919 में राजनीति में पदार्पण किया दिनांक 6.9.1919 को कांग्रेस के मंच से दिल्ली में पहला व्याख्यान दिया। स्वामी जी ने शुद्धि के क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया तथा अछूतों के लिए भी कार्य कर उन्हें सम्मान देने का प्रयत्न किया यही नहीं उन्होंने दिल्ली में हड़ताल होने पर जुलूस में अगुआई का कार्य किया जुलूस को बेधड़क हो अंग्रेज सेना की संगीनों को धत्ता देते हुए चांदनी चौक घण्टाघर से आगे ले गए थे यही नहीं उनका पूरा जीवन ही राष्ट्र के लिए समर्पित रहा।

सन् 1923 में आगरा में ब्रहद राजपूत सम्मेलन हुआ वहां हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना हुई स्वामी श्रद्धानन्द जी इस सभा के प्रधान चुने गए इसके साथ ही शुद्धि के काम में तेजी आ गई। दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दू सभा की स्थापना की गई अनेक मुसलमान हिन्दू धर्म में आने लगे स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का कार्य और भी तेज कर दिया उन्होंने तीन पत्र निकालने आरम्भ कर दिए। यह थे 'अर्जुन' जो हिन्दी में निकलता था दूसरा 'तेज' जो उर्दू में था, अंग्रेजी भाषा में भी 'लिवरेटर' नामक पत्र निकाला इनमें शुद्धि का खूब प्रचार किया जाता था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाया इसके साथ ही अनेक आर्य क्रान्तिकारियों ने भी शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाया जिसमें पं. लेखराम जैसे महान क्रान्तिकारी भी शहीद हो गये। यह शुद्धि का कार्य कोई नया नहीं अपितु इससे पूर्व भी विदेशी व विधर्मियों को शुद्ध कर आर्य धर्म में सम्मिलित किया गया यह कार्य मान्धाता, इन्द्र, देवल ऋषि द्वारा भी किए जाते रहे याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा टीका में भी शुद्धि का वर्णन है आचार्य विद्यारण्य द्वारा पंचदशी में भी शुद्धि कार्य का वर्णन दिया गया है यह कार्य महाभारत काल में भी हुआ उस समय यवन शक तुषार आदि को आर्य धर्म में लाने हेतु राज शक्ति का भी प्रयोग किया गया तथा हूण, आँध्र, पुलिन्द, पुक्कस, आमीर, कंक पवन, खस आदि हीन व विधर्मी जातियां आर्य संस्कृति के सम्पर्क में आने से आर्य धर्मी हो गई। प्राचीन काल में विधर्मियाँ को आर्य बनाने के लिए सूत्र ग्रन्थों में 'व्रात्यस्तोम' यज्ञ का विधान भी किया गया ताण्ड्य ब्राह्मण के सत्तरहवें अध्याय में भी शुद्धि संस्कार का वर्णन दिया है। शिवाजी ने भी एक ब्राह्मण जो उनकी मंत्रि परिषद में था को मुसलमान बनने के बाद पुनः आर्य धर्म में वापिस लेकर ब्राह्मणों में सम्मिलित करा लिया था।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब हम किसी विधर्मी को आर्य धर्मी बना लेते हैं तो हिन्दू परिवार उसे तिरछी आंखों से देखने लगते हैं और समाज में उस विधर्मी परिवार स्त्री व पुरुष को बड़ी हेय की द्रष्टि से देखते व अनेक, विरोधी बातें करने लगते हैं यह हमारी छोटी मानसिकता व सोच है प्राचीन समय से पता नहीं कितने स्त्री पुरुष जो देवल ऋषि महाभारत, व्रात्यस्तोम द्वारा एवं अन्य ऋषिओं द्वारा आर्य धर्म में लाए गए आज हम जब उन हिन्दू (आर्यों) को अपना अभिन्न अंग मानते हैं वह या हम एक हिन्दू, (आर्य) समाज के ही अंग हैं, ऋषि दयानन्द के अनुसार आर्य विचार ग्रहण करने पर ही विधर्मी आर्य हो जाते हैं उनके गुण कर्म स्वभाव आर्यो जैसे हो जाने चाहिए स्वामी श्रद्धानन्द ने भी यही कार्य किया हमें उनके द्वारा स्थापित आर्य समाजों व भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के शुद्धि सम्बन्धी कार्यो को तीव्र गति से करते रहना चाहिए क्योंकि हम चाहते हैं कि संसार का उपकार हो सब शान्ति से रहें सबके मन विचार एक से हों। इसके लिए शुद्धि ही सर्वोत्तम उपाय है यही अस्त्र है यही शस्त्र है मानवता का सुन्दर मार्ग है। जो परिवार शुद्ध होकर आर्य धर्म में आ जाते हैं उनसे अपनों जैसा ही व्यवहार करना चाहिए ताकि उन्हें यह अनुभव न हो कि हम पहले क्या थे। आर्य धर्म ही हमारा अपना धर्म है। –प्रचारक शुद्धि सभा दिल्ली

दयानन्द वाणी

- शरीर की पुष्टि तथा आत्मा और अन्तःकरण की शुद्धि प्रभु प्राप्ति का साधन है।
- धर्म–कर्म और आत्मा–परमात्मा से भिन्न वस्तुओं में आनन्द समझना अविद्या का एक लक्षण है।
- जैसे समाधिस्थ योगी जन प्रभु–ध्यान में मग्न हो जाते हैं वैसे ही कम–से–कम एक घण्टा सब मनुष्यों को प्रभु की उपासना में मग्न हो जाना चाहिये।
- धर्मात्मा और उपकारी जनों को संसार में भय नहीं होता।
- जब शय्याशायी होने लगे तो प्रणव पवित्र (ओ३म्) का जप किया करो जब तक नींद न आए, पाठ करते रहो। यहाँ तक कि उसी नाम स्मरण में सो जाओ। इससे उत्तमोत्तम लाभ होते हैं, वासनामय देह बदल जाता है।

thearyasamaj.org

बच्चों के पूर्ण विकास के लिए प्यार और देखभाल आवश्यक है!

– डा0 जगदीश गांधी, शिक्षाविद् एवं संस्थापक–प्रबन्धक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(१) बच्चों के पूर्ण विकास के लिए प्यार और देखभाल आवश्यक है :–

अभिभावक बच्चों के साथ बातचीत के समय हमेशा सकारात्मक शब्दों का उपयोग करें तथा उन्हें सदैव अच्छे कामों के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को मार्गदर्शन देते समय कड़े शब्दों का प्रयोग उनके कोमल मन–मस्तिष्क को ठेस पहुँचाता है। बच्चों को प्यार और देखभाल से ही जीवन में प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।

(२) सर्वप्रथम यह जानना कि कार्य के पीछे छिपी भावना क्या है?:-

बहुत से लोगों की मनोवृत्ति होती है कि वे अपने बच्चों में गलत क्या है इसे पहले ही ढूंढ़ते हैं। परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को विशिष्ट बनाया है। सब में अलग–अलग मौलिक प्रतिभाएँ होती हैं। हमें बच्चों की विशिष्ट प्रतिभा को पहचानकर बचपन से ही उसे विकसित करने में सहयोग करना चाहिए। सचिन तेंदुलकर के पिता जानते थे कि सचिन में क्रिकेट खेलने की प्रतिभा है और उन्होंने उसे उसी दिशा की ओर प्रोत्साहित किया। सचिन ने भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल होने के बाद कक्षा 10 की परीक्षा दी थी।

(३) बच्चों की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएँ :-

आज की वर्तमान शिक्षा केवल भौतिक विकास के लिए है। इस कारण से बालक का अधूरा विकास ही हो पा रहा है। भौतिक के साथ सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास होने से बालक का सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। केवल भौतिक ज्ञान अर्जित करने के कारण स्कूल के छात्र योजनाबद्ध तरीके से अपराध करते पाये जा रहे हैं। बाल एवं युवा छात्रों में ढेरों क्षमताएँ तथा ऊर्जा होती हैं। इसे सही दिशा की ओर मोड़ने की आवश्यकता है। ताकि क्षमताओं का दुरुपयोग न हो।

(४) ईश्वर से प्रेम तथा उसकी शिक्षाओं का पालन करें :-

ईश्वर से प्रेम और उसकी शिक्षाओं के पालन से बच्चे और अभिभावकों में अच्छे रिश्ते बनते हैं। इस तरह के परिवारों से निकले बच्चे समाज की सेवा बेहतर ढंग से करते हैं। मानव जाति की सेवा भेदभाव रहित होकर करना ही आज का युग धर्म है। प्रतिदिन सोचे कि बच्चे के प्रति मेरे व्यवहार तथा निर्णय का क्या असर पड़ेगा?हमारी सकारात्मक सोच बालक को ज्ञानी तथा मानव जाति के लिए उपयोगी बनाने में मदद करती है।

(५) बालक से भावनात्मक रूप से जुड़े :-

भागम–भाग के इस युग में अभिभावक होने के नाते अपने बच्चों के लिए थोड़ा सा समय निकालना कठिन कार्य है। बच्चों के संतुलित विकास में मार्गदर्शन तथा सहयोग देने के लिए थोड़ा सा त्याग करें। आपके बालक की आवश्यकताएँ आपसे क्या कराना चाहती हैं? केवल बहुत सी भौतिक सुविधायें उपलब्ध करा देने भर से ही बालक के प्रति दायित्वों की पूर्ति नहीं हो सकती। घर तथा स्कूल से बढ़कर कोई तीर्थधाम नहीं हैं।

(६) बच्चे ही हमारी असली पूँजी हैं :-

जैसे–जैसे बच्चा बढ़ता है उसी तरह हमारी जिम्मेदारी भी उसके प्रति बढ़ती है। अतः हमें भी बच्चे की मानसिक विकास के अनुरूप बदलना चाहिए। यदि आप अपने बच्चे को बाल्यावस्था में संस्कार–व्यवहार को विकसित होने के लिए स्वस्थ वातावरण नहीं देते हैं तो युवावस्था में गुणों के अभाव में उसे जीवन की परीक्षा में सफल होने में कठिनाई होती है। अभिभावक उस समय उसके आस–पास नहीं होते हैं। गुणों को विकसित करने की सबसे अच्छी अवस्था बचपन की होती है।

(७) बालक की स्वतंत्रता का सम्मान करें

कई अभिभावक अज्ञानतावश अपने बच्चों को स्वतंत्रता के प्रति कड़ा रूख अपनाते हैं। यह मानव स्वभाव की एक सच्चाई है कि मनुष्य दूसरे की अपेक्षा स्वयं से नियंत्रित होने में ज्यादा सहजता महसूस करता है। बालक को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में विकसित होने के अवसर देने से उनके अंदर स्वयं को आदेश देने की भावना का विकास होता है। बालक में गुणों को अपनाने का स्वभाव विकसित कर देने से वह आत्मानुशासित बनता है।

(८) हर समस्या का हल आपसी परामर्श से निकाला जा सकता है :-

प्रत्येक बालक धरती का प्रकाश है। बच्चों से अच्छा व्यवहार पाने का आसान तरीका है कि हम उनके साथ वैसा ही अच्छा व्यवहार करें। हमें बच्चों को वही मान–सम्मान देना चाहिए जो हम दूसरों को देते हैं। हमें उनसे प्रेमपूर्ण वातावरण में बातचीत तथा परामर्श करना चाहिए। हमें उनके सुझाव या विचारों को महत्व देना चाहिए। आपका आपके बच्चों के साथ व्यवहार ही उसे दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना सिखाता है।

(९) शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण बनाने में टीचर-गार्जियन स्कीम का योगदान :

शिक्षा के द्वारा बालक को सम्पूर्ण गुणात्मक व्यक्ति बनाने का प्रयत्न होना चाहिए। टीचर–गार्जियन के रूप में शिक्षक अभिभावकों से घर में सम्पर्क कर उनके बच्चों के सम्पूर्ण जीवन के निर्माण के बारे में सुझाव अभिभावकों से प्राप्त करें। अभिभावकों के मूल्यवान सुझाव बच्चों की शिक्षा को और अधिक उद्देश्यपूर्ण बनाने में काफी मदद करेंगे।

(१०) पवित्र ग्रन्थों की शिक्षाओं का पान करने से लाभ होगा :-

महापुरूषों के जीवन चरित्र हमें ये सन्देश देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सफलता का मार्ग स्वयं निर्मित करना पड़ता है। अर्थात महान अवतारों एवं महापुरूषों के विचारों को जीवन में अपनाने से लाभ होता है। अवतारों एवं महापुरूषों की पूजा करने तथा उनका गुणगान करने से कोई लाभ नहीं होगा वरन् उनकी शिक्षाओं का पान करने से लाभ होगा।

(११) कैरियर, नौकरी या व्यवसाय द्वारा आध्यात्मिक संतुष्टि :-

ऐसी कोई नौकरी या व्यवसाय नहीं करना चाहिए जो आत्मा के विकास में बाधक हों। अतः ईमानदारी और परिश्रम से कैरियर, नौकरी या व्यवसाय को 'समाज के लिये उपयोगी बनना ही आत्मा के विकास का एकमात्र उपाय है। बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जिससे कि वे सशक्त समाज के निर्माण व विकास में अपना योगदान कर सकें। केवल पवित्र मानव सेवा की भावना से जो कार्य किया जाता हैं उससे ही आत्मा का विकास होता है न कि किसी भी अन्य तरीके से।

(१२) ईश्वर -पर आस्था एवं विश्वास जरूरी :-

यह एक शाश्वत सत्य है कि ईश्वर सदैव हमारी अच्छे कार्यो में हर पल मदद करता है। हमें अपनी प्रत्येक सांस को प्रभु के कार्य में लगाने की सोच एवं स्वभाव को विकसित करना चाहिए। कहा गया है कि सांसों का खजाना यू ही नही लुटाना चाहिए। प्रत्येक सांस को प्रभु के कार्य में लगाना चाहिए। यहीं जीवन की सफलता का रहस्य है। कुछ छात्र परीक्षा में असफल हो जाने पर आत्म हत्या तक करने का गलत निर्णय ले लेते हैं। हमें ईश्वर पर भरोसा रखकर असफलता को स्वीकार करना चाहिए तथा पुनः पूरी एकाग्रता तथा मनोयोग से बिना एक पल गँवाये तैयारी में जुट जाना चाहिए। हमारी यह आस्था एवं विश्वास होना चाहिए कि ईश्वर सदैव हमारे हृदय में रहते हुए हमारा मार्गदर्शन करता है। हमें सदैव अपने जीवन का परम उद्देश्य मालूम होना चाहिए। जीवन का परम उद्देश्य है कि ईश्वर को जानना तथा उसकी पूजा करना। ईश्वर को जानने के मायने उसकी शिक्षाओं को जानना तथा पूजा के मायने उन शिक्षाओं पर चलना। प्रभु की राह पर चलते हुए यदि हमें कोई भारी से भारी कष्ट भी दें तो परमात्मा से उसे क्षमा कर देने की प्रार्थना हमें करनी चाहिए।

(१३) स्कूल को बचाये संसार स्वयं बच जायेगा :-

मानव मस्तिष्क को तरंगों को यदि एक निश्चित दिशा में लगा दिया जायें तो वह जीवन में बड़ी से बड़ी सफलता को प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक बालक धरती का प्रकाश है। हर बालक के अंदर सृजन की अपार क्षमताएँ अंतर्निहित रहती हैं, किन्तु ये प्रस्फुटित तभी हो पाती है, जबकि इन्हें उचित पोषण देने वाला शिक्षण, संस्कार एवं वातावरण मिले। क्षमताविहीन जिन्दगी में भला आकर्षण कहाँ?सारा आकर्षण, समूचा चुंबकत्व तो केवल क्षमताओं में निहित है। विद्यालय समाज के प्रकाश या अन्धकार का केन्द्र है। स्कूल को बचाये संसार स्वयं बच जायेगा। प्रत्येक बालक को अच्छा एवं तेजस्वी बनाना हमारा लक्ष्य है ताकि वह मानव जाति के लिए ईश्वर का वरदान एवं मानव जाति का गौरव बने। हम यह पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि 21वीं सदी में भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक गुणों से सुसज्जित विश्वव्यापी एवं मानवीय दृष्टिकोण की भावी पीढ़ी के हाथों में विश्व का उज्ज्वल एवं आध्यात्मिक स्वरूप निकट भविष्य में उजागर होना सुनिश्चित है।

thearyasamaj.org

आओ बनें पावन आख्यान का एक उज्ज्वल प्रसंग

–ब्रह्मदेव भाटिया,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

दीर्घ काल से भारत की जनता ऐसे प्रशासन का बोझ ढोती चली आ रही थी जिसका नेतृत्व विचार शून्य, दिशाहीन तथा निष्प्रभावी राजनीतिज्ञों के हाथ में था। प्रशासन जनता को सामान्य जीवन के साधन तथा सुविधाएं तक उपलब्ध कराने में अक्षम था। प्रशासन का यह नेतृत्व देश की सामाजिक संरचना तथा संवेदना को समझ पाने में पूर्णतया संवेदनहीन था। परिणामतः प्रशासन की सामाजिक नीतियां समाज के विभिन्न वर्गों में सदा तनाव तथा असंतोष का वातावरण बनाए रखती थीं। सामान्य जनता के जीवन को अभावों, असुविधाओं, सामाजिक तनावों तथा असंतोष ने दूभर बना दिया था। सामाजिक जीवन में निराशा का घोर अंधकार व्याप्त था।

इस अंधकार में भटकती जनता के लिए एक लौ आशाओं का प्रबल आधार बनकर प्रज्वलित हुई। इस लौ के प्रकाश ने जन जन में आशाओं का संचार किया। हर दिशा से भारत के बहुरंगी समाज के लोग इस आलोक को समर्पित कर दिए। सब लोगों के समर्पण का आकलन हुआ। देश की विशाल जनता का समर्पण फलीभूत हुआ सारे देश की हर दिशा में खुशियों का ज्वार अपने भरपूर उफान पर उभरा। राष्ट्रपति भवन की, पावन घारा में, संसार के सबसे बड़े प्रजातन्त्र का शपथग्रहण समारोह गरिमा पूर्ण मर्यादा के साथ सम्पन्न हुआ। पड़ासी देशों के प्रधान मन्त्रियों की उपस्थिति ने समारोह का गौरव बढ़ाया। इस शपथ ग्रहण समारोह को संसार के सब देशों ने देखा तथा सराहा गया। सम्पूर्ण देश के देशवासी समारोह को गर्व से निहारते हुए गद गद हो उठे। सब लोगों के मन देश के प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास जी मोदी के लिए शुभ कामनाओं से भर गए। सब ने माता गंगा से प्रार्थना की कि देश की प्रगति के लिए प्रधानमन्त्री की सारी परिकल्पनाएं पूर्ण हों।

यह सर्वविदित सत्य है कि 2014 के चुनावों की विजय एक असामान्य राजनैतिक विजय है। इस उपलब्धि द्वारा भारत ने उन अवांछित तत्वों से मुक्ति पाई है जो भारत के गौरव पूर्ण स्वरूप को संवरने नहीं दे रहे थे। ऐसे तत्वों के प्रति अब किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया से परहेज करना उचित है। कुछ अल्पज्ञानी धर्म गुरुओं की उन्मादी अधकचरी वाणी आज की उपलब्धि को बेवजह मलिन कर रही है। उन की वाणी उन तत्वों को भी बल प्रदान कर रही है जो दीर्घकाल से भारत के मूल सामाजिक स्वरूप को निर्बल करते रहे हैं। हम भारत के सफल सामाजिक स्वरूप को सक्षम सम्पन्न बना कर ही उस सामाजिक चिन्तन से मुक्ति पा सकते हैं जो चिन्तन देश के समग्र स्वरूप के लिए अनुपयुक्त है। भारत के प्राकृतिक परिवेश ने ऋषियों को देववाणी के विभिन्न रुपों के सृजन की क्षमता प्रदान की तथा उन्होंने भारत को वृहद आध्यात्मिक साहित्य से सम्पन्न किया है। भारत के प्राकृतिक परिवेश में गंगा यमुना, कृष्णा, हिमालय, सतपुड़ा, सहयाद्रि सरीखें अनेक नदियों, पर्वतों के रूप तथा अनेक अन्य भौतिक स्वरूप हैं जो भारत के किसी भी निवासी को भारत की अतीत की गरिमा पूर्ण मर्यादाओं की ओर ले जाने में सक्षम है। वृक्ष के नीचे बैठने वाला यात्री वृक्ष की छाया में ही सुख पाता है भारत के प्राकृतिक पर्यावरण की छाया तो बहुत घनी है। भारत के हर प्राणी की आत्मा तो उस अनुभूति का आभास व्यक्त करेंगी जो इस धरा की पावनता का सुख भोगेगा। तभी तो एक कवि ने कहा है "मुझ को तो इस खाके वतन का हर ज़रा देवता है।" आज हमारे प्रधान मन्त्री का उद्घोष है "सब का साथ सब का विकास"।

2014 का चुनाव मात्र राजनैतिक विजय नहीं है। यह चुनाव भारत के एक प्राचीन आख्यान में वर्णित समुद्र मन्थन के प्रसंग के समान है। प्राचीन आख्यान के प्रसंग में तो समुद्र मन्थन से अनेक रत्न प्राप्त हुए थे। इन रत्नों में अमृत का एक कलश भी था। इस अमृत–कलश को असुर आकाश मार्ग से ले भागे थे। मार्ग मे यह अमृत कलश कहीं कहीं छलक गया था। इस अमृत कलश में से अमृत की कुछ बून्दें पृथ्वी पर आ गिरी थीं। जिस भी स्थान पर अमृत की बून्दें गिरीं वह स्थान तीर्थ स्थान की प्रतिष्ठा प्राप्त कर गए। इन तीर्थ स्थानों पर, ग्रहों की स्थिति को देख कर कुम्भ का मेला युगों से लगता चला आ रहा है। यह मेला अनेक सप्ताहों तक चलता रहता है। इस मेले में देश विदेशों से लाखों लोग भाग लेने आते हैं। मेले के स्थान पर सब सुविधाओं से युक्त एक नगर सा महीनों तक बसा रहता है। देश विदेश की अनेक संस्थाएं तथा प्रशासन मेले की व्यवस्था करने में लगे रहते हैं। यह संसार का सबसे बड़ा तथा सब से लम्बे समय तक चलने वाला मेला होता है। वर्ष भर विभिन्न पावन अवसरों पर तथा विभिन्न धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने के लिए लोग इन तीर्थ स्थानों की यात्रा करते रहते है।

भारत का 2014 का चुनाव भी भारत के विशाल लोक–महासागर का समुद्र मन्थन था। इस समुद्र मन्थन से जनता के विशाल समर्थन का अपूर्व अमृत कलश बाहर आया। यह अमृत कलश मां भारती की समर्पित सन्तानों के हाथ में आया है। जन समर्थन का यह अमृत कलश जिन सन्तानों के हाथ में आया है उन सन्तानों को किसी भी प्रकार की राजनैतिक प्रतिष्ठा या सांसारिक लाभ की इच्छा से मुक्त रह कर मातृ भूमि पर अपने समर्पण का अमृत बरसाना है। उन्हें विधाता ने मातृ भूमि की सेवा करने का अनूठा अवसर प्रदान किया है। उनका यह पावन दायित्व है कि वह इस अवसर का जनता के हित में, निष्काम भाव से, भरपूर उपयोग करें।

आज के लोगों द्वारा, मातृ भूमि पर जन हित के भाव से, किए गए कर्मों का जो अमृत बरसेगा वह आने वाली सन्तानों को युगों तक सुख भरा जीवन प्रदान करता रहेगा। आज की पीढ़ी के कर्म आने वाली सन्तानों के लिए सत्कर्मों की मर्यादा स्थापित करेंगे। यदि हम सत्कर्मों की मर्यादाओं को स्थापित करने में सफल हुए तो हमारी आने वाली सन्तानों के कर्म हमारी आत्माओं को अगले जन्म में भी सुख देते रहेंगे। अतीत में अनेक देश भारत से बहुत कुछ सीखते रहे हैं, बहुत कुछ पाते रहे हैं। आज भी अनेक देश भारत की ओर प्रजातन्त्र की सफल परम्पराओं, तथा सन्तुष्ट सामाजिक जीवन के चलन को सीखने के लिए आशा भरी दृष्टि से देख रहे हैं। वह भारत से कुछ ऐसी परम्पराएं पाने की आशा करते हैं जिससे उनके जीवन में तृप्ति की बयार चले।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास जी मोदी ने अपना उत्तरदायित्व सम्भालने के तुरन्त पश्चात अन्य देशों के साथ सम्बन्धों का एक नया अध्याय लिखना शुरु कर दिया है। यह मैत्री सम्बन्धों का प्रदर्शन मात्र नहीं है। यह सम्बन्ध सांस्कृतिक तथा आर्थिक सम्बन्धों के जीवन्त स्वरूप है इन सम्बन्धों के द्वारा हम एक दूसरे के विकास में भागीदार बनने के साथ साथ अन्य देशों के लिए हितकारी बनने की परिकल्पना भी कर रहे हैं।

भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात, स्वतन्त्र भारत में जन्म लेने वाले भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास जी मोदी भारत के विकास का एक नया आख्यान लिखने जा रहे हैं। सभी भारत वासियों को एक स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है कि वह देश के प्रति अपने समर्पित कर्मों द्वारा इस पावन आख्यान का उज्ज्वल प्रसंग बनें।

सन्ध्या रहस्य

प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रातः सायं सन्ध्या करनी आवश्यक है। सन्ध्या का अर्थ है मिलना, प्रातः और सायं की पवित्र और मनोहर बेला में आत्मा और परमात्मा के मिलन से परम आनन्द की प्राप्ति होती है। आत्मा के भीतर ज्ञान का प्रकाश होता है। पापों का हनन होता है। तथा शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्ति होती है।

सन्ध्या के उन्नीस (19) मन्त्र हैं। प्रथम मन्त्र ओं शन्नो देवी... में मनुष्य जीवन का लक्ष्य बताया गया है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य है सुख शान्ति की प्राप्ति। शेष मन्त्रों में इस सुख शान्ति के प्राप्त करने के साधन बतलाये गये हैं और वे तीन भागों में विभक्त है।

पहले भाग में दूसरे मन्त्र से लेकर 7वें मन्त्र तक छः मन्त्रों में बतलाया गया है कि मनुष्य का अपने (मन,इन्द्रिय, शरीर) के प्रति क्या कर्तव्य है।

दूसरे भाग में आठवें (8वें) मन्त्र से तेहरवें (13वें) मन्त्र तक छः मन्त्रों में मनुष्य का दूसरों के प्रति क्या कर्तव्य है, यह बताया है।

तीसरे भाग में, चौदहवें (14वें) मन्त्र से उन्नीसवें (19वें) मन्त्र तक छः मन्त्रों में मनुष्य का ईश्वर के प्रति क्या कर्तव्य है, यह बताया गया है।

thearyasamaj.org

यज्ञ में वेद मंत्रों से ही आहुति क्यों?

– डॉ. गंगा शरण आर्य
डी.एन. वाई. व
मॉस्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर

हवन प्रक्रिया के साथ–साथ मंत्रों का उच्चारण क्यों किया जाता है इसका महर्षि दयानंद ने "सत्यार्थ प्रकाश" में उत्तर देते हुए लिखा है "मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जाए और मंत्रों की आवृति होने से कण्ठस्थ रहे, वेद–पुस्तकों का पठन–पाठन और रक्षा भी होवे" महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" के वेद विषय में यज्ञ के समय मंत्रोच्चारण के साथ बताते हुए लिखा है "उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है तथा होम से जो–जो फल होते हैं उनका स्मरण भी होता है। वेद मंत्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक ना हो जाए, क्योंकि ईश प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्म आरंभ होते हैं सो वेदमंत्रों के उच्चारण से यज्ञ मं उसकी प्रार्थना सर्वत्र हो जाती है। इस लिए सब उत्तम कर्म वेदमंत्रों से ही करना उचित है।" लेकिन देखा जाता है कि दीर्घकाल से पौराणिक पण्डे–पुजारी यज्ञादि अनुष्ठान कराते समय ॐ नमः शिवायः स्वाहा, ॐ गणेशाय नमः स्वाहा आदि अनेकों मनघडंत, अवैदिक वाक्यों को वेद मंत्रों की संज्ञा देकर यज्ञ में आहुति डलवाकर भोली–भाली जनता को उल्लू बनाते जा रहे हैं वो भी अपने अज्ञान को छिपाने के लिए केवल उदरपूर्ति हेतु। आप किसी को प्रीतिभोज का निमंत्रण दें और उसका मधुर शब्दों से स्वागत करने के स्थान पर व्यंग्यपूर्ण कटु शब्दों से उसकी अवमानना करें तो उसके लिए सारे स्वादिष्ट व्यंजन व्यर्थ हो जाते हैं। इसके विपरीत यदि रूखा–सूखा भोजन भी प्रेमपूर्वक मधुर वार्तायुक्त सत्कार की भावना से अतिथि को परोसा जाए तो वह मुस्कान के साथ तो उस भोजन को स्वीकार करता ही है साथ ही उस भोजन का गुणकारी पोषण भी उसे प्राप्त होता है। यज्ञ में भी देवताओं (पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि) का प्रीतिभोज के समान ही आह्वान किया जाता है।

भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण तो कतिपय भौतिक क्रियाओं तथा यज्ञ की गैसीय प्रतिक्रियाओं से दूर हो जाते हैं, किन्तु ध्वनि–प्रदूषण सर्वाधिक सूक्ष्म प्रभावकारी होता है। विश्व में कही भी एक शब्द बोला जाता है तो वह सूक्ष्म विद्युत चुम्बकीय तरंगों में रूपान्तरित होकर सारे आकाश में फैल जाता है, तभी तो दूरदर्शन या आकाशवाणी से वही शब्द सारे विश्व में एक साथ एक ही समय में प्रसारित हो तो हैं। पृथ्वी के शोर, चीख–पुरार, नारेबाजी, चीत्कार, ध्वनि विस्तारक यंत्रों से ध्वनि प्रदूषण आकाश में भर जाता है, इस आकाश–प्रदूषण का परिशमन किन शब्दों में संभव है ?वेदमाता की वाणी से ही संभव है ऐसा क्यों ?क्योंकि यज्ञ करते समय हम जो वेद मंत्रों का पाठ करते हैं उन मंत्रों की ध्वनि तरंगे हमारे शरीर, मस्तिष्क, मन और आत्मा पर विशेष प्रभाव डालती हैं साथ–साथ वातावरण में जाकर समस्त वातावरण की दूषित ध्वनियों को समाप्त करती हैं तथा मधुरता व सरसता का प्रसार करती हैं क्योंकि मंत्र एक प्रतिरोधात्मक शक्ति होती हैं एक मंत्र जाप एक प्रकार की चिकित्सा पद्धति है। वर्तमान में शब्द ध्वनि का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में नवीनतम पद्धति के रूप में किया जाने लगा है, जिसे अल्ट्रासोनिक वेव्स ट्रीटमेंट या शब्द ध्वनि तरंग उपचार कहते हैं। अल्ट्रासाउंड आदि यंत्रों द्वारा न केवल शरीर के आंतरिक अंगों की दशा का ज्ञान लिया जाता है अपितु प्रभावित अंगों पर मंत्र द्वारा तरंगों (स्वर लहरियों) के स्पर्श से उसकी पीड़ा आदि को दूर कर दिया जाता है।

पराबैंगनी (अल्ट्रासोनिक) या सुपरसोनिक ध्वनि तरंग में यंत्र के मध्यम से साउंड ध्वनि को कंद्रित किया जाता है इन शब्द लहरियों में इतना बल होता है कि शब्द लहरियों को केंद्रित करने वाले इन यंत्रों से जब पीड़ा वाले स्थानों को कई दिन तक 5–7 मिनट के लिए छुआ जाता है तब ये दर्द चले जाते हैं। किसी भी बड़े चिकित्सालय में जाकर इस बात का पता तथा अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। वेद मंत्रों का उच्चारण क्या है ?यह स्वर लहरियों साउंड वेक्स का ही तो वायु मंडल में प्रसारण है। अगर यंत्र के द्वारा पराबैंगनी अल्ट्रासोनिक वेव्स से रोग दूर किया जाता सकता है, तो वेद मंत्रों के एक खास प्रकार के उच्चारण से ऐसी लहरें उत्पन्न कर देना जिनसे रोग का निवारण हो, कोई आश्चर्य की बात नहीं कोई समय रहा होगा जब वेदपाठी इस विधि को जानते थे, परन्तु वेद मंत्रों द्वारा वायुमंडल को तथा मानव को प्रभावित कर देना आजकल के पराबैंगनी (अल्ट्रासोनिक वैव्स) द्वारा उपचार के ही समान हैं। मंत्र साधना के सहारे प्रतिकूल प्रकम्पनों से बचा जा सकता है। जिस तरह रसायन शास्त्री यह जानता है किन–किन रसायनों के मेल से क्या नवीन व विशिष्ट रसायन बनता है वैसे ही ध्वनि वैज्ञानिक को यह भास होता है कि किन–किन शब्दों के संयोजन से किस–किस तरह ही तरंगें पैदा होती है। वे पर्यावरण में व्याप्त परमाणुओं को कैसे प्रकम्पित करती हैं और उसकी परिगति किस प्रकार होगी। आज से लाखों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों ने भी इसी विज्ञान के आधार पर मंत्रों की संयोजना की थी जिसे आधुनिक काल का वैज्ञानिक प्रमाणिक मानता है। मंत्र ध्वनि के विशिष्ट समूह होते हैं। लगातार वही मंत्र उच्चारण करते रहने से वातावरण में उन ध्वनि तरंगों का विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। यही मंत्रों का परिणाम है।

जब शब्दों का उच्चारण होता है तब उनसे आकाश में कंपन उत्पन्न होता है। कंपन समस्त लोक परिक्रमा कर लेती है और अनुकूल तरंगों को पाकर उससे मिल जाती है उसके संयुक्त प्रभाव से साधक की इच्छा को मूर्तरूप मिल जाता है। यज्ञ में वेद मंत्रों के उच्चारण का प्रयोजन भी तो उनके विशिष्ट छन्द स्वर के नियत उच्चारण से ऐसी शब्द लहरें उत्पन्न कर देना है जिससे न केवल आधि–व्याधियों का निवारण ही हो, प्रत्युत सम्पूर्ण आकाश ऐसे विषाणुओं से मुक्त होकर स्वच्छ व हितकारी बना रहे। यज्ञ कुण्ड में डाली गई श्रद्धा पूर्वक सामग्री जब अग्नि में जाकर सूक्ष्म रूप धारण करती है तब वह वैदिक मंत्रों की ध्वनि से मिलकर वातावरण में व्याप्त हो जाती है। इसकी सूक्ष्म विद्युतीय तरंगे एक ओर वातावरण का परिशोधन करती हैं वहीं दूसरी ओर मानवीय मन में संव्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, कुटिलता, पाप अनीति, अत्याचार, वासना, तृष्णा आदि मानसिक विकारों क्लेशों को दूर करती है। आत्मा को शुद्ध कर बलवान बनाती है। परमात्मा के सामीप्य का आनंद प्राप्त कराती है।

मंत्रों का वैज्ञानिक आधार प्रसिद्ध डॉ. आर.बी. ध्वन के अनुसार यह सच है कि मंत्रोच्चारण से हमारे मन और दिमाग को अपार शक्ति मिलती है भौतिकी के सिद्धान्तों के आधार पर इसे दो रूपों में अध्ययन किया जा सकता है शब्दों की ध्वनि व आंतरिक विद्युत धारा। अध्यात्म और ज्योतिष विज्ञान के विद्वानों के अनुसार आधुनिक विज्ञान की परिभाषिक शब्दावली में इसे अल्फा तरंग कहा जा सकता है। कहते हैं कि मंत्रोच्चारण से आंतरिक विद्युत धारा प्रवाहित होती है। दरअसल, शब्दों की ध्वनि आर्तरिक विद्युत धारा प्रवाहित करती है। जब किसी मंत्र का उच्चारण किया जाता है तो धवनि उत्पन्न होती है, जिससे कम्पन होता है। यह ध्वनि कम्पन के कारण तरंगों में परिवर्तित होकर वातावरण में व्याप्त हो जाती है। इसके साथ ही आर्तरिक विद्युत भी (तरंगों में) इस में व्याप्त अथवा निहित रहती है यह शब्द की लहरों को व्यक्ति विशेष और दिशा विशेष की ओर भेजती है। यह इच्छित कार्य को पूर्ण करने में सहायता करती है अब प्रश्न उठता है कि यह आर्तरिक विद्युत किस प्रकार जनरेट होती है ?कई अनुसंधानों से यह बात सामने आई है कि ध्यान, ममन, चिन्तन आदि की अवस्था में रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप शरीर में विद्युत जैसी एक धारा प्रवाहित होती है (इसे हम शारीरिक विद्युत कह सकते हैं) और मस्तिष्क से विशेष प्रकार का विकिरण उत्पन्न होता है जिसका नाम अल्फा तरंग (इसे हम मानिसिक विद्युत कह सकते हैं) रखा गया है। यही अल्फा तरंग मंत्रों के उच्चारण करने पर निकलने वाली ध्वनि के साथ गमन कर दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करती है या इच्छित कार्य करने में सहायक होती है। जिस उद्देश्य से मंत्र जपा जा रहा है उसमें सफलता दिलाने में यह सहायक सिद्ध होती है इस अल्फा तरंग को ज्ञान धारा भी कह सकते हैं।

दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डब्लू. सेल्वामूर्ति ने अपने शोधपत्र "फिजियोलॉजिकल इफेक्ट्स आफ मंत्राज ऑन माइण्ड एण्ड बॉडी" में लिखा है कि अग्निहोत्र (यज्ञ) के मंत्रों का मनुष्य की फिजियोलॉजी तथा नर्वस सिस्टम तंत्रिका तंत्र पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसे उन्होंने न्यूरोफिजियोलॉजिकल प्रभाव की संज्ञा दी है। उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र करने से शरीर का तापमान सामान्य से एक डिग्री सेंटीग्रेट कम हो जाता है, इससे

thearyasamaj.org

मानसिक शान्ति मिलती है, तनाव दूर होता है, और मस्तिष्क विश्रान्ति की अवस्था में पहुँच जाता है, जिसे विज्ञानवेत्ता "अल्फा स्टेट" के नाम से सम्बोधित करते हैं। यज्ञ से उल्फा तरंगो में बीस प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गयी है। इस प्रयोग-परीक्षण के लिए आठ स्वस्थ व्यक्तियों का चयन किया गया और उन पर दो दिन अग्निहोत्र का प्रयोग किया गया। प्रथम दिन बिना मंत्र के तथा दूसरे दिन सस्वर मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ सम्पन्न किया गया। इस बीच आठों व्यक्तियों के विभिन्न कार्यकीय परिवर्तनों जैसे-हृदयगति, ई.ई.जी., रक्तचाप, जी.एस.आर आदि का संबंधित अत्याधुनिक मशीनों उपकरणों से जांच-पड़ताल व प्रमापन किया गया। इन परीक्षणों में पाया गया कि यज्ञीय वातावरण सुक्ष्मीकृत एवं वायुभूत वनौषधियों एवं मंत्रोच्चार के प्रभाव से हृदयगति शान्त हो गई। शरीर का तापमान एक डिग्री सेंटीग्रेट कम हो गया। जी.एस.आर. भी उस समय बढ़ा हुआ पाया गया। ई.सी.जी. में भी परिवर्तन मापा गया 'डेल्टा' मस्तिष्कीय तरंगों में कमी तथा 'अल्फा स्टेट' के कारण विशेष रूप से पाये गये।

यज्ञ की प्रभावी क्षमता का प्रमुख कारण यह है कि यज्ञाग्नि में मंत्रोच्चारण के साथ जो हव्य पदार्थ, वनौषधियाँ आदि आहुति के रूप में डाली जाती हैं वे सुक्ष्मीकृत होकर लयबद्ध मंत्रोच्चार से उत्पन्न उच्च आवृति की ध्वनि तरंगों के साथ मिल जाती है। इस प्रकार उत्पन्न उच्चस्तरीय संयुक्त ऊर्जा तरंगों का स्थायी व दीर्घकालिक प्रभाव बना रहता है। अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. हार्वर्ड सितगुल ने अपने अनुसंधान निष्कर्ष में बताया है कि अकेले "गायत्री महामंत्र" में ही इतनी प्रचण्ड सामर्थ्य है कि उसके सस्वर उच्चारण से मानसिक विक्षोभों-दुर्भावनाओं का शमन किया जा सकता है। उन्होंने गायत्री महामंत्र के सस्वर उच्चारण के एक सेंकड में एक लाख तरंगे उत्पन्न होने का मापन करके यह रहस्योद्घाटन किया है। नवभारत टाइम्स समाचार पत्र सितम्बर 2007 के अंकों में तीन लेख छपे थेः- 1. चीन के एक किसान ने अपनी पैदावार बढ़ाने के लिए पौधों को क्लासिकल, म्यूजिक सुनाता था जिससे उसकी पैदावार 7 प्रतिशत बढ़ गइ। 2. स्प्रिचुअलिटी से होती है स्ट्रेस बस्टिंग (तनाव मुक्ति)। इससे आपका जिंदगी को देखने का तरीका बदल जाता है। तनाव दूर हो जाता है। 3. कनाडा के शोधकर्ताओं के अनुसार म्यूजिकल से याददाश्त, सीखने की क्षमता तथा आई क्यू बढ़ जाते हैं उपर्युक्त तीनों समाचारों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संगीत का हमारे शरीर तथा मन पर कितना प्रभाव पड़ता है यज्ञ करते समय वैदिक मंत्रों का सस्वर पाठ हमारे मन मस्तिष्क को विशेष शान्ति प्रदान करता है।

हवन कुण्ड के चारों ओर बैठे याज्ञिक गण जब वेद पाठ करते हैं तो उससे स्वतः ही एक प्रकार का प्राणायाम होने लगता है। परिणाम स्वरूप असीम सौरभ युक्त प्राणपद वायु वेद- पाठियों के फेफड़ों में भर जाती है और उन्हें निरोगी बना देती हैं। यज्ञ के भौतिक लाभ के साथ-साथ आध्यात्मिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ में जो आहुति डाली जाती है उसके दो भाग हो जाते हैं। एक स्थूल भाग जो सूर्य आदि को प्राप्त हो जाता है, दूसरा भाग संस्कार रूप में हमारे चित पर पड़े हुए सुसंस्कारों को छिन्न-भिन्न करता है यज्ञ का यह सूक्ष्म भाग हमारे सूक्ष्म शरीर को पवित्र करता है हवन की वैज्ञानिकता यह है कि इसका स्थूल भाग भौतिक शुद्धि करता है तथा सूक्ष्म भाग आध्यात्मिक शुद्धि, श्रद्धा-भक्ति और तन्मयता से दी हुई आहुतियाँ सबके हृदय मंदिर में चुपचाप प्रवेश करती जाती है और हृदय के कलुषित विचारों की सफाई करती जाती है और उसके स्थान पर पुनीत भावनाओं का अभ्युदत व निःश्रेयस की सिद्धि होती है। यज्ञ करते समय मंत्रों का जाप हमें अनेक शारीरिक व मानसिक लाभ पहुँचाता है इन मंत्रों में सबसे प्रमुख शब्द 'ओ३म्' है जो कि ईश्वर का निज नाम है उसके बारम्बार उच्चारण करने से अनेक मानसिक व्याधियाँ शान्त हो जाती हैं तदन्तर गायत्री मंत्र मुख्य मंत्र माना जाता है। स्वामी संकल्पानन्द जी ने अपनी पुस्तक "गायत्री महिमा" में लिखा है। इसके जाप से हमारे शरीर में विद्यमान दस प्राणों की रक्षा होती है इसमें स्तुति प्रार्थना, तथा उपासना तीनों सम्मिलित हैं इसके उच्चारण से कु-विचारों से बचा जा सकता है इससे बुद्धि तत्व तीव्र व तीक्ष्ण होने लगता है इस प्रकार अग्निहोत्र में प्रयुक्त अन्य सैंकड़ों मंत्र भी इसी प्रकार लाभकारी हैं।

"मंत्र" शोधक संयंत्र की तरह काम करता है जैसे झाड़ू, कमरे में स्थित कचरे को साफ करता है वैसे ही मंत्र हमारे अन्तःकरण में स्थित बाधक तत्वों को दूर करने में मदद करता है। मंत्र की पुनरावृत्ति से अन्तःकरण या चेतना में हलचल उत्पन्न होती है। यह हलचल कुसंस्कारों और सुसंस्कारों में परस्पर टकराव उत्पन्न करती है और जैसे-जैसे जाप क्रिया बढ़ती जाती है वैसे-वैसे व्यक्ति में कुसंस्कारों एवं असद्वृत्तियों का पराभव होने लगता है अर्थात् चित्त में पड़े कुत्सित संस्कार भविष्य में उसे क्रियाशील करने में अक्षम होते जाते हैं क्रियान्वयन के समय हमेशा सद्विचारों की विजय होती है। यही कारण है कि हमारे वैदिक धर्म में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों का महत्त्व है जिनके करने से हमारे पुराने कुसंस्कार हमें वैसे कार्य करने में प्रेरित नहीं कर पाते क्योंकि नए श्रेष्ठ संस्कार हमारे अन्दर, हमारे सूक्ष्म शरीर में समाहित होते रहते हैं। ये हैं मंत्र जाप के लाभ। जब हम यज्ञ करते हैं तो मंत्रोच्चारण करते हैं अतः समस्त लाभ यज्ञ में बोले जाने वाले वेद के पवित्र मंत्रों द्वारा ही होते हैं अन्य अवैदिक वाक्यों से नहीं क्योंकि अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो अन्यों से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रान्ति रहित सत्य होता है वैसा अन्य का नहीं सो यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण से जहाँ शारीरिक लाभ मिलते हैं वही अनगिनत मानसिक लाभ भी हमें अनायास ही प्राप्त होते रहते हैं-

1. वेद पाठ को संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा वेद पाठ को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करते हुए इसे मानव सभ्यता की अलौकिक विरासत घोषित किया गया।

2. वेद पाठ हृदय के लिए शक्तिदायक-युनेस्को द्वारा 7 नवम्बर 2003 को पेरिस में गीत-संगीत की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की गई। उसमें वेद पाठ की उपयोगिता को हृदय की शान्ति-सांत्वना के लिए सर्वोच्च प्रथम स्थान पर ठहराया गया है।

3. मंत्रों की ध्वनि-तरंगे रोग उपचार में सहायक मंत्रों की ध्वनि तरंगे शरीर व मन पर शक्तिशाली प्रभाव डालती हैं। ये तरंगे रोगों के उपचार में उसी प्रकार सहायता करती हैं, जिस प्रकार फिजोथेरेपी में आल्ट्रासॉनिक या सुपरसॉनिक ध्वनि तरंगो द्वारा शरीर दर्द वाले स्थानों का दर्द दूर किया जाता है।

4. भारत के राष्ट्रपति के द्वारा वेद मंत्रों के व्यापक प्रभाव की चर्चा- वेदमंत्रों के उच्चारण से उत्पन्न स्वर लहरियों द्वारा शरीर के विभिन्न अवयवों पर पड़ने वाले व्यापक लाभकारी प्रभाव के विषय में, भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने, हरिद्वार में उत्तरांचल संस्कृत एकादमी द्वारा आयोजित समारोह में कहा वेद मंत्रों का मानव मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इससे मस्तिष्क तरोताजा रहता है। राष्ट्रपति महोदय ने वहाँ वेद मंत्रों की सी.डी. भी मंच से चलवाकर सारे जनसमूह को वेदमंत्रों को सुनने की प्रेरणा दी तथा स्वयं भी खड़े होकर वैदिक मंत्र-पाठ सुनते रहे।

5. डिवाइन लाईफ सोसायटी ऋषिकेश के प्रसिद्ध योगी स्कॉलर स्वामी शिवानंद जी के अनुसार – Chanting of Mantras destroys the microbes and vivifies the cells and tissues. They are best, most potent aniticeptics and germicides. They are more potent than ultra-violet rays or Rontgen rays.

अर्थात् वेद मंत्रों का गायन-रोगाणुओं को नष्ट कर देता है और कोशिकाओं व ऊतकों को अनुप्राणित करता है उनमें नव-जीवन का संचार करता है। वेद मंत्र सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली रोगाणुरोधक और रोगाणुनाशक हैं (रोगों के कीटाणुओं को रोकने और उन्हें मिटाने वाले हैं) वेद मंत्रों का गायन पराबैंगनी व आल्ट्रावायलेट किरणों से भी अधिक ताकत रखता है।

अतः पाठकों से मेरा निवेदन है कि कभी भी अपने घरों में यज्ञ करें अथवा करायें तो ईश्वरीय वाणी सत्यसनातन वेद के पवित्र मंत्रों से ही करें व कराएँ तथा अवैदिक वाक्यों को वेद मंत्रों की संज्ञा देकर यज्ञ अनुष्ठान कराने वाले धन लोलुप पेटार्थी ब्राह्मणों से बचें।

– चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, शाहाबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61, मो. 9871644195

शुद्धि सभा के आधारस्तंभ स्व. द्वारकानाथ जी सहगल

स्व. द्वारकानाथ सहगल जी की छत्रछाया में आर्यसमाज राजेन्द्रनगर तथा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा पुष्पित-पल्लवित होते रहे हैं। अपने जीवन में व्यक्तिगत हानि-लाभ से बहुत ऊपर उठकर आपने अपना सारा जीवन समाज और शुद्धि सभा के लिए समर्पित किया हुआ था। समाज के कार्यो को आप बड़ी योग्यता से रांपादित करते थे। आप वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ होने के साथ-साथ हर प्रकार की सामाजिक गतिविधियों के संचालन में पूर्णतया सक्षम तथा देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत सहृदय-हृदय महामानव थे। आपके सभी पारिवारिक जन आज भी सक्रिय रूप से न केवल आर्यसमाज से जुड़े हैं बल्कि बहुत अच्छे ढंग से आपकी पारिवारिक तथा सामाजिक श्री वृद्धि कर रहे हैं। ज्येष्ठ पुत्र स्व. सुरेन्द्र जी एवं स्व. सुभाष जी समाजसेवी थे, कनिष्ठ पुत्र श्री अशोक सहगल जी आर्य समाज के गौरव हैं। पुत्रियां श्रीमती उमा बजाज जी, श्रीमती गुलशन मल्होत्रा जी, श्रीमती सुषमा भसीन जी एवं श्रीमती सुरीला खत्री जी सभी प्रभु कृपा से प्रसन्न एवं सम्पन्न हैं। आप आर्यसमाज तथा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के वर्षो तक प्रधान, मन्त्री, केन्द्रीय सभा के उपप्रधान तथा आर्ययुवक परिषद् के भी प्रधान थे। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कार्य को आपने जिस कर्त्तव्यनिष्ठा से सम्पन्न किया वह इस दिशा में कार्य करने वाले सभी आर्यजनों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। हम आपकी पावन स्मृति को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

–हरबंसलाल कोहली, का. प्रधान

महर्षि दयानंद ने विश्व को नई दिशा दी

महर्षि दयानंद निर्भीक सन्यासी थे, जिन्होने धार्मिक चेतना उत्पन्न करके विश्व को नई दिशा थी। आर्य समाज ने ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा से समाज व देश को जो रास्ता दिखाया वह अनुकरणीय है। उसके लिए निहित स्वार्थ त्यागने होंगे। ये उद्गार 131वें महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव, रामलीला मैदान, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में केन्द्रीय राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह, मुख्य अतिथि ने कहे।

महर्षि दयानंद निर्वाणोत्सव पर स्वामी देवव्रत सरस्वती, सभा मंत्री राजीव आर्य, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, अरुण वर्मा ने भी प्रेरक विचार रखे। आचार्य ऋषिपाल के ब्रह्मत्व में आयोजित "विश्व कल्याण यज्ञ" में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव पर आर्थिक सहयोगी

श्रीमती कौशल्या देवी शारदा रानी जी, न्यू रोहतक रोड़, करोलबाग, नई दिल्ली		1000/–
कै. प्रेम कुमार वलेचा जी, मयूर विहार फेस-1, दिल्ली		500/–
श्रीमती हर्ष आर्या, ए-ब्लाक, सरस्वती विहार, दिल्ली	आजीवन स.	300/–
श्री लोकेश जी, जाग्रति एन्कलेव, दिल्ली-92	आजीवन स.	300/–
श्री शैलेस त्रिपाठी जी, गली नं. 8, शास्त्री पार्क, दिल्ली	दान	300/–
श्री विजय गुप्ता जी, संरक्षक भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा		200/–
बेबी सुवीरा जी, मयूर विहार फेस-1 दिल्ली		100/–
वन्दना जी, मयूर विहार फेस-1 दिल्ली		100/–
श्री तेजवीर सिंह, जैन पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती रमा रानी जी सरस्वती कुंज सोसाइटी, पड़पड़गंज, दिल्ली		100/–
श्री रमा शंकर एडवोकेट, तीस हजारी कोर्ट, सिविल विन्स दिल्ली		101/–

शुद्धि संस्कार

एक मुस्लिम युवती तथा एक ईसाई परिवार स्वेच्छा वैदिक (हिन्दू) धर्म में सम्मिलित हुए केरल राज्य में शुद्धि सभा के बड़े ही कर्मठ प्रचारक जी ने यह शुद्धि संस्कार सम्पन्न करवाया। इस शुद्धि संस्कार में आर्य समाज कालीकट (केरल) का भी सहयोग प्राप्त हुआ। शुद्ध हुए सभी व्यक्तियों का हार्दिक स्वागत किया गया, और वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

माह अक्टूबर 2014 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज इन्द्रानगर, बगलौर, कर्नाटक	मासिक	1500/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी सै.-15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी (महामंत्री) शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, वसन्तनगर, बगलौर	मासिक	500/–
श्री आशीष किंगर एवं सुदर्शन किंगर जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		500/–
श्री यशपाल शास्त्री जी, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली	दान+पत्रिका	400/–
श्री आर.एस. शर्मा जी, इन्दिरा नगर, गाजियाबाद		400/–
श्री किरन बाबू, श्री निवास नगर, खैराताबाद हैदराबाद	आजीवन सदस्य	300/–
श्री वीरेन्द्र सिंह लोधी जी, अणुमाला, तापी, नार्थ गुजरात		100/–

नई स्थिर निधि बनाने के लिए– आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज सी-3, ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली	21000/–
आर्य समाज सी-3, के सम्माननीय सदस्यों द्वारा जनकपुरी, नई दिल्ली	5500/–
आर्य समाज प्रेम नगर, बहादुर गढ़, हरियाणा	5100/–
आर्य समाज डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली	5100/–
आर्य समाज कस्तूरबा नगर सेवा नगर, नई दिल्ली	5100/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सैक्टर-16, फरीदाबाद, हरियाणा	5000/–
आर्य समाज सैक्टर-15, फरीदाबाद, हरियाणा	1100/–
केन्दीय आर्य युवक परिषद, आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली	2100/–
श्री शिवकुमार मदान जी, प्रधान आर्य समाज सी-3 जनकपुरी	1000/–
श्री प्रधान जी आर्य समाज, सै.-15, फरीदाबाद, हरियाणा	500/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान राशि

कुमारी गरिमा जी, बी.2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–

श्रीमती संतोष वधवा जी नारायणा विहार द्वारा

श्रीमती नीता खन्ना जी, आर्य समाज कालका जी, नई दिल्ली	500/–
श्री राज किशोर श्री प्रभुदयाल जी, चितला गेट, चावड़ी बाजार, दिल्ली	300/–
श्रीमती राजकुमारी जी मुटरेजा, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली	300/–
श्रीमती वेद प्रभा बरेजा जी, आर्य समाज कालकाजी, नई दिल्ली	300/–

श्रीमती सावित्री शर्मा जी द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती सरोज सहगल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1800/–
श्रीमती उमा बजाज जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1500/–
श्री प्रणव शर्मा जी, बी-59, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
श्री गौरव माने जी, फरीदाबाद	500/–
सुश्री वेद मदान जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	300/–
श्री भीष्म लाल जी,आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती सुमन चावला जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती प्रवीण मेहता जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती सुषमा आर्या जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती सुदर्शना मेहता जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती तारा ढ़ींगरा जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–

श्रीमती सावित्री नन्दा जी द्वारा

श्रीमती सुमन मल्होत्रा जी, नोयडा (उ.प्र.)	2100/–
आर्य समाज गुड़गांव के सदस्यों द्वारा–	200/–

निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा परामर्श

आरोग्य की प्राप्ति आयुर्वेद द्वारा ही होता है, क्योंकि आयुर्वेद ही प्रकृति एवं पुरुष का सम्बन्ध स्थापित कर साम्यता भी बनाये रखता है। अतः आयुर्वेद की चिकित्सा सर्वोत्तम चिकित्सा पद्धति है।

गर्दन दर्द, कमर दर्द, घुटनों के दर्द, जोड सम्बन्धी समस्याओं एवं अन्य समस्त रोगों के समाधान हेतु निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा परामर्श प्रति रविवार प्रातः 9 से 11 बजे तक आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली -60 में दिया जाता है।

सम्पर्क सूत्र– डॉ. दीपक तिवारी मो. 9953024116, 011-45118411.

thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-11-2014 Delhi Postal R.No. DL (N) 060/2012-14
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

रोड़,

शुद्धि समाचार

नवम्बर – 2014

विद्या और अविद्या को समझकर मृत्यु दुःख से छूटा जा सकता है

-डॉ. सुदर्शनदेव

ओ३म् विद्यां चाविद्यां यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययामृतश्नुते।। यजुर्वेद 40/14

पदार्थ **(यःविद्यां च)** जो विद्वान् विद्या और उसके सम्बन्धी साधनोपसाधनों तथा **(अविद्यां च)** अविद्या और उसके उपयोगी साधनसमूह को और **(तत् उभयं सह वेद सः)** इन दोनों के ध्यानगम्य मर्म को और स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह **(अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा)** शरीरादि जड़ पदार्थ– समूह से किये पुरुषार्थ कर्मकाण्डोक्त कर्मभोग वा कर्मोपासना से मरण दुःख के भय को उल्लंघन करके वा तरके (विद्यया अमृतम् अश्नुते) आत्मा और शुद्ध अन्तःकरण के संयोग में जो धर्म उससे उत्पन्न हुये दर्शनरूप विद्या से अर्थात्–यथार्थ ज्ञान वा ज्ञानकुण्ड के परिणामरूप विज्ञान से नाशरहित अपने स्वरूप वा परमात्मा को जानकर मोक्ष को प्राप्त होता है।

भावार्थ – जो मननशील मनुष्य विद्या और अविद्या के यथार्थ स्वरूप को सम्यक् जानता है, ठीक समझता है, वह अविद्या आदि से प्राप्त होने वाले असह्य, भयंकर कष्टों से, दुःखों से ऊपर उठ जाता है जिससे कि उस विद्वान् मननशील मनुष्य को मोक्ष जैसा अत्यन्त सुख प्राप्त होता है।

व्याख्या – इस उपरोक्त यजुर्वेद की कथा में परमकारुणिक दयालु परमेश्वर मनुष्यमात्र को वेद के द्वारा उपदेश या आदेश देते हुए कह रहे हैं कि मेरे को प्राप्त करने के इच्छुक मनुष्य–तू विद्या और अविद्या के स्वरूप को सही ढंग से समझने का प्रयास कर इन दोनों को यदि तू ठीक से समझ गया, जान गया कि अविद्या से दुःख और विद्या से सुख मिलता है तो तू अविद्यादि अत्यन्त पीड़ा पहुंचाने वाले दुःखों से सर्वथा, हर दिन के लिए छूट कर विद्या को प्राप्त कर सकता है जिससे कि विद्या के द्वारा तुझे और ऐसे कार्यों को करने की जरुरत नहीं होगी जो क्षणिक सुख पहुंचाने वाले हैं और थोड़े देर तक सुख देने वाले हैं अर्थात् तुझे ऐसे सुखों को लात मारके परम् अतिउत्तम, अतिश्रेष्ठ सुख जो कि आत्म–परमात्म दर्शन है उसको प्राप्त बिना किये चैन नहीं मिलेगा।

इस मन्त्र में कहा गया कि– विद्या और अविद्या इन दोनों को समानरूप से जानो और अविद्या से ऊपर उठकर विद्या से मोक्ष को प्राप्त हो जाओ। तो यहाँ यह समझना होगा कि विद्या और अविद्या कौन सी चीज है जिससे मोक्ष और बन्ध की प्राप्ति होती है – योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि कहते हैं–

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या

अर्थात् – अनित्य में नित्य, अपवित्र में पवित्र, दुःख में सुख, जड़ में चेतनता का ज्ञान अविद्या है और इससे विपरीत अनित्य में अनित्य, नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र, पवित्र में पवित्र, दुःखों में दुःख, सुख में सुख, जड़ मे जड़ और चेतन में चेतनता का भाव रखना विद्या है। इस प्रकार विद्या और अविद्या को समझकर अपने जीवन में अविद्या को छोड़कर विद्या को अपनाने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। तभी तो योगदर्शनकार पुनः कहते हैं–

तदभवात् संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम्।।

जब अविद्यादि क्लेश दूर होके, विद्यादि शुभगुण प्राप्त होते हैं, तब जीव सब बन्धनों और दुःखों से छूटके मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

–आचार्य, गुरुकुल हरिपुर, नवापारा, उड़ीसा

सूचना

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स (कमलानगर) दिल्ली–7 का वार्षिकोत्सव आगामी 14–15–16 नवम्बर 2014 को मनाया जायेगा। जिसमें श्री नरदेव आर्य जी (भरतपुर राजस्थान) बालों के भजन होंगे। और रात्रि में वैदिक प्रवचन आर्ष गुरुकुल नोयडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी शास्त्री द्वारा किये जायेंगे।

आप इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

मंत्री, आर्य समाज बिड़ला लाइन्स, दिल्ली–7

ऋषि निर्वाण

– हरबंसलाल कोहली

ऋषि निर्वाण मनाना है तो, कुछ तो करना होगा
अब बंदर को हनुमान की सेना मानना बंद करना होगा
मूर्ति पूजा से सब कुछ मिल जाता, यह तो एक भ्रम ही है
सर्वधर्म समभाव को जाओ भूल, वैदिक धर्म का दम भरना होगा।
फिल्मों टी.वी में नंगापन न हो, यह रोकना बहुत जरुरी है
जहां से सृष्टि उत्पत्ति हुई, उसे भारत का अंग मानना जरुरी है
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, शुद्धि से ही पूर्ण करना होगा
सत्यार्थ प्रकाश बाईबल से अधिक छपवा कर ही आराम करना होगा।
संसार का उपकार बातों से नहीं, कर्म से ही होता
जैसे अशोक ने प्रचारक भेजे, वैसे ही कुछ करना होगा
दो करोड़ हस्ताक्षर मलिका विकटोरिया को दिये, गऊ हत्या फिर भी जारी है
गऊ मांस खाने वालों को हिन्दु बना, गऊ माता को तो बचाना ही होगा।
हिन्दी ही है आर्य भाषा, दयानन्द का ऐसा कहना था
इसे मिले पूर्ण राज्य भाषा का दरजा, हिन्दी आन्दोलन तीव्र करना होगा
गुरुकुलों का जाल बिछे इस में तो दो राय नहीं
दस नियम घर घर पहुँचे, ऐसा प्रयत्न करना होगा।
बुराई पर राजा को भी डांट देना, ऐसी हिम्मत तो लानी होगी
मृत्यु समय भी ईश्वर न भूले, गुरुदत्त को इस से ज्ञान हुआ
लेखराम चलती गाड़ी से कूदे, जब लक्ष्य पर उनका ध्यान हुआ
दीप से दीप जलाना होगा, आर्य समाज का नाम चमकाना होगा।
गुरु दक्षिणा में जीवन अर्पण, क्या कोई और ऐसा कर सकता
अन्ध विश्वास और पाखण्ड का नाश, दिन रात इसे तो करना होगा
शारीरक मानसिक सामाजिक उन्नति बहुत जरुरी है
निस्वार्थ कर्म सब से उत्तम, यह समझना और समझाना होगा।
हवन यज्ञ का प्रचार बढ़ाते चलो, गायत्री मंत्र सब से बुलाते चलो
आतंकवादियों को शांति पाठ पढ़ाते चलो, ओ३म् का झंडा लहराते चलो
संगठन सूक्त का अर्थ बुद्धि में लाते चलो
आर्य जाति को शक्तिशाली बनाते चलो।
देश को जगत गुरु बनाते चलो, और अपना जीवन सफल बनाते चलो।।

स्वास्थ्य के सूत्र

1. आयु की रक्षा के लिए सूर्योदय से 2 घण्टे पहले उठें। 2. मल शुद्धि के लिए सुबह ताम्रपात्र का पानी पीयें। 3. दाँत व मसुढों की रक्षा के लिए दातुन का प्रयोग ब्रुश से अच्छा है। 4. आयु, बल, बुद्धि बढ़ाने के लिए सबुह सैर करनी चाहिए। 5. शरीर व त्वचा की मजबूती के लिए नित्य तैल मालिश करें। 6. शरीर को फूर्तिला बनाने के लिए नियमित व्यायाम करें। 7. आलस्य नाश व शरीर स्वच्छता के लिए प्रतिदिन स्नान करें। 8. मनोबल के लिए नित्य स्वाध्याय व देवपूजन करें। 9. सतोगुण बढ़ाने के लिए नित्य दुध ही पीना अच्छा है चाय नहीं। 10. स्वास्थ्य रक्षा के लिए समय पर शुद्ध सात्विक संतुलित भोजन ही करें। 11. भोजन के बाद पेशाब करना तथा धीरे–धीरे टहलना व बाईं करवट लेटना पेट के लिए उत्तम है। 12. भोजन के तुरन्त बाद दौड़ धूप, व्यायाम निषेध है। 13. रात्रि भोजन सोने के लगभग 2 घंटे पूर्व एवं भूख से कुछ कम करना चाहिए। 14. तम्बाकू व नशीली चीजों के प्रयोग से स्वास्थ्य बिगड़ता है। 15. बढ़े हुए नाखुन, स्वच्छता एवं कार्य कुशलता में बाधक है। 16. मौंस, मछली, के प्रयोग से काम, क्रोध व वासना बढ़ती है। 17. मद्यपन करने से दिल–दिमाग का ओज नष्ट होता है। 18. मल–मूत्र वेग रोकने से पेट व मूत्राशय के रोग बढ़ते हैं। 19. आँखों के लिए पर्याप्त नींद आवश्यक है। 20. इन्द्रिय संयम से मन शान्ति व कार्य कुशलता बढ़ती है।

मुद्रक, व प्रकाशक – **रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस,** 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 **दूरभाष :** 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 **दूरभाष :** 23847244 से प्रकाशित। **सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री**